मुक्ति कारवां बुलेटिन-24 सितंबर, 2018

बच्चियों के साथ भेदभाव से उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है

- **मुक्ति कारवां का झारखंड के गिरिडीह में प्रवेश**
- **टीम के सदस्यों को किया गया सम्मानित**
- **गीत, नुक्कड़ नाटक द्वारा बाल दुर्व्यापार (ट्रैफिकिंग), बाल मजदूरी और यौन शोषण के खिलाफ चलाया जा रहा है जन जागरुकता अभियान**
- **बच्चियों के साथ अन्याय करने वाला समाज कभी भी बेहतरी नहीं कर सकता**

'बाल दुर्व्यापारियों अब तुम्हें जेल जाना होगा'... 'बाल दुर्व्यापार बंद करो'..... 'बाल यौन शोषण बंद करो'.... जैसे नारे लगाते हुए मुक्ति कारवां की टीम झारखंड के गिरिडीह जिले में प्रवेश कर गई। शहर के स्थानीय सर जेसी बोस बालिका उच्च विद्यालय में करीब 1600 लोगों की मौजूदगी रही। यहां पर मुक्ति कारवां के सदस्यों को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर गिरिडीह जिला परिषद् के

अध्यक्ष राकेश महतो, उप विकास आयुक्त मुकुंद दास, जिला समाज कल्याण अधिकारी पम्मी सिन्हा, जिला शिक्षा अधिकारी पुष्पा कुजूर, बाल संसद की अध्यक्ष मुस्कान परवीन, बाल संसद की प्रधानमंत्री सोनम सिंह सहित मुक्ति कारवां के वरिष्ठ साथी मौजूद थे।
जिला परिषद् अध्यक्ष राकेश महतो ने कहा कि यह हमारे लिए खुशी की बात है कि मुक्ति कारवां की टीम बाल दुर्व्यापार, बाल श्रम, बाल यौन शोषण जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के ख्याल से व्यापक जन अभियान चला रही है और हमारे जिले में आई है। हम इस अभियान के साथ हैं और हमारा उनको पूर्ण सहयोग है।
उप विकास आयुक्त मुकुंद दास ने कहा कि कैलाश सत्यार्थी जी और बचपन बचाओ आंदोलन बच्चों के सवाल पर हमेशा ही जन अभियान चलाता रहा है। इससे आम लोगों को बच्चों के अधिकारों और उनकी परेशानियों से रूबरू होने का मौका मिलता है। आज भी बाल शोषण, बाल दुर्व्यापार जैसी घटनाएं देखने को मिलती हैं, जबकि सरकार और प्रशासन भी बहुत सजगता से इसे रोकना चाहते हैं।
जिला समाज कल्याण अधिकारी पम्मी सिन्हा ने कहा कि बच्चियों के साथ भेदभाव करके हम उनके विकास को और अवरुद्ध कर देते हैं। हमें उन्हें सम्मान देना चाहिए, बालिका के साथ अन्याय करने वाला समाज कभी भी बेहतरी को हासिल नहीं कर सकता। बाल संसद की अध्यक्ष मुस्कान परवीन ने सवाल उठाए कि क्यों बेटियों के साथ भेदभाव होता है? क्यों उन्हें अकेले चलने से डर लगता है? क्यों उन पर भद्दे कमेंट किए जाते हैं? यह सब ऐसे सवाल हैं जिन्हें हर लड़की को सहना पड़ता है। लेकिन हम लड़कियां कमजोर नहीं हैं, हम पर जुल्म होने पर प्रतिकार का स्वर भी निकल कर आता है। सभा में बड़ी तादाद में छात्राओं, आंगनवाड़ी सेविकाओं, किशोरियों की उपस्थिति रही।

मुक्ति कारवां की टीम ने इसके बाद लोकगीत के माध्यम से लोगों को बाल दुर्व्यापारियों से सावधान रहने की अपील की-"गांव शहर में हो रहल बा सुनला बाल व्यापार... लाइकन के बहरी मत भेजिह सुन ला मेरे यार... तनी अपने से रहिया होशियार भाई जी... नता ठगी के बनवा शिकार भाई जी।"
मुक्ति कारवां की टीम इसके बाद अपने अगले गंतव्य धार्मिक नगरी मधुबन में प्रवेश कर गई। यहां भगवान महावीर को मानने वाले जैन

धर्म के लोग रहते हैं। जैन धर्म से संबंधित कई ऐतिहासिक मंदिर और पर्वत भी यहां हैं। यहां पर अवस्थित श्वेतांबर मंदिर गेट के पास लोकगीत और नुक्कड़ नाटक द्वारा बाल श्रम, बाल यौन शोषण, बाल दुर्व्यापार के खिलाफ लोगों को जागरूक किया गया। इसके बाद पीरटांड़ थाना जिला गिरिडीह पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए पूर्व बाल मजदूर रहे बचपन बचाओ आंदोलन के कार्यकर्ता गोविंद खनाल ने कहा कि हमें जाति-धर्म से ऊपर उठकर बाल मजदूरी और बाल यौन शोषण के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। जब किसी लड़की को कोई पुरस्कार मिलता है तो तो हम सबको खुशी मिलती है। इसी तरह जब किसी के साथ अन्याय होता है, तो सबको दुख भी होता है। इसलिए हमें किसी के साथ भी अन्याय का डटकर मुकाबला करना चाहिए। मुक्ति कारवां के साथी लोकगीत और नुक्कड़ नाटक द्वारा लोगों को जागरूक कर रहे हैं। यहां भी लोकगीत और नुक्कड़ द्वारा लोगों को बाल दुर्व्यापार के खिलाफ प्रतिरोध करने के लिए प्रेरित किया गया।

मुक्ति कारवां

मुक्ति कारवां एक सचल दस्ता है, जो गांव-गांव में घूमकर बाल दुर्व्यापार (ट्रैफिकिंग), बाल मजदूरी और यौन शोषण जैसी बुराइयों के खिलाफ जन जागरूकता फैलाने का काम करता है। इस दस्ते में करीब 10 से 15 नौजवान होते हैं, जो ज्यादातर बाल दुर्व्यापार और बाल मजदूरी से मुक्त कराए हुए होते हैं। ये नौजवान नुक्कड़ नाटक, दीवार लेखन, जन जागरण गीत, छोटी-छोटी बैठकों और सभाओं के जरिए लोगों को जागरूक करते हैं। मुक्ति कारवां 1997 से शुरू होकर बाल दुर्व्यापार बहुल राज्यों में भ्रमण करते हुए अब तक 4 लाख किलोमीटर की यात्रा तय कर लाखों लोगों को बाल दुर्व्यापार के खिलाफ जागरूक कर चुका है।